International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 04, No. 02(II), April - June, 2022, pp. 178-183

भारत में चयनित सार्वजनिक और निजी क्षेत्र के बैंकों की संपत्ति की गुणवत्ता का एक अध्ययन (बैंक ऑफ बड़ौदा एवं आई.सी.आई.सी.आई. बैंक के विशेष संदर्भ में)

कु. छाया शाक्य*
डॉ. एस.के. खटीक**

सार

भारत में बैंकिंग का इतिहास काफी वर्ष पुराना हैं। इस अवधि के दौरान बैंकिंग व्यवस्था में अनेक परिवर्तन हुए हैं। विश्व स्तर पर विभिन्न प्रकार के बैंकों की स्थापना विभिन्न उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए की गई, जिसके अंतर्गत अनुसूचित बैंक, गैर–अनुसूचित बैंक, वाणिज्यिक बैंक, सहकारी बैंक इत्यादि सार्वजनिक और निजी क्षेत्र के बैंकों के रूप में चल रहे हैं। भारत में भी एक संगठित बैंकिंग व्यवस्था हैं, जो भारत की अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण आधार हैं। बैंकिग कि निष्पादन क्षमता को मापने के हेतु सन् 1979 ई.संघीय वित्तीय संस्थान परीक्षा परिषद (यू.एस.ए.) ने एक रेटिंग प्रणाली विकसित की जो वार्षिक रिपोर्ट के आधार पर वित्तीय संस्थान के प्रदर्शन और कामकाज की अलग अलग स्तर पर जांच करती है। जैसे पूंजी पर्याप्तता, संपत्ति गुणवत्ता ,प्रबंधन दक्षता, उपार्जन और तरलता शोधार्थी के द्वारा शोध पत्र में संपत्ति गुणवत्ता का अध्ययन किया गया हैं। संपत्ति की गुणवत्ता किसी बैंक के समग्र वित्तीय प्रदर्शन को निर्धारित करने में सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में से एक है। संपत्ति की गुणवत्ता मूल रूप से समान अर्थ वाले दो शब्द हैं। संपत्ति की गुणवत्ता बैंक की वित्तीय ताकत को मापने के लिए एक महत्वपूर्ण पैरामीटर या घटक है। संपत्ति की गुणवत्ता को मापने या मापने के पीछे उद्देश्य कुल संपत्ति के प्रतिशत के रूप में गैर–निष्पादित परिसंपत्तियों (एनपीए) के घटक का पता लगाना है। यह उन अग्रिमों के मॉडल को इंगित करता है जो बैंक ने ब्याज आय उत्पन्न करने के लिए किए हैं।

शब्दकोशः *एनपीए, रेटिंग प्रणाली, वित्तीय प्रदर्शन, गैर–अनुसूचित बैंक, वाणिज्यिक बैंक।*

प्रस्तावना

बैंको की वित्तीय ताकत को मापने के लिए संपत्ति की गुणवत्ता एक महत्वपूर्ण पैरामीटर या घटक हैं। संपत्ति की गुणवत्ता को मापने या मापने के पीछे मुख्य उद्देश्य यह हे कि कुल संपत्ति के प्रतिशत के रूप में गैर–निष्पादित परिसंपत्तियों (एन.पी.ए.) का पता लगाना होता हैं। यह उन अग्रिमों के मॉडल को इंगित करता है जो बैंक ने ब्याज आय उत्पन्न करने के लिए किए हैं। इस प्रकार, संपत्ति की गुणवत्ता बैंक की बैलेंस शीट में देनदारों के प्रकार को दर्शाती है। संपत्ति की गुणवत्ता को मापने से पहले, एन.पी.ए. के प्रकारों का अध्ययन करना आवश्यक है जो इस प्रकार हैं

- **सकल एन.पी.ए.**
- **शुद्ध एन.पी.ए.**

---

* शोधार्थी, बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल, मध्यप्रदेश।
** आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, वाणिज्य विभाग, बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल, मध्यप्रदेश।

सकल एन.पी.ए.

सकल एन.पी.ए. सभी ऋणों का योग हैं। बैलेंस शीट में सकल एन.पी.ए. बैंकों द्वारा दिए गए ऋणों की गुणवत्ता को दर्शाता हैं, इसमें सभी गैर–मानक संपत्तियां शामिल हैं जैसे कि सब–स्टैंडर्ड, संदिग्ध और संपत्तियों से हानि जिसे आर.बी.आई. के दिशानिर्देशों के अनुसार एन.पी.ए. के रूप में वर्गीकृत किया।

शुद्ध एन.पी.ए.

शुद्ध एन.पी.ए. इस प्रकार के एन.पी.ए. होते हैं जिनमें बैंक ने एन.पी.ए. के संबंध में सभी प्रावधानों को काट लिया है। चूंकि भारत में, बैंक की बैलेंस शीट में बड़ी मात्रा में एन.पी.ए. होते हैं और ऋण की वसूली और बट्टे खाते में डालने की प्रक्रिया में समय लगता है, आर.बी.आई. के दिशानिर्देशों के अनुसार एन.पी.ए. में जो प्रावधान करने होते हैं, वे काफी महत्वपूर्ण होते हैं। इसलिए सकल और शुद्ध एन.पी.ए. के बीच का अंतर काफी ज्यादा होता हैं। इसलिए, न केवल संपत्ति, बल्कि संपत्ति की गुणवत्ता को भी बैंकिंग क्षेत्र में स्थिरता, प्रतिस्पर्धा, स्वस्थ विकास, मुख्य संपत्ति से आय आदि के संदर्भ में देखा जाता हैं। वर्तमान अध्ययन में संपत्ति की गुणवत्ता के लिए निम्नलिखित अनुपात का उपयोग किया हैं।

- **शुद्ध अग्रिम का शुद्ध ए.पी.ए. अनुपात**
- **कुल सम्पत्ति का कुल निवेश अनुपात**
- **कुल परिसंपत्ति का शुद्ध एन.पी.ए. अनुपात**

शोध विषय के अध्ययन का औचित्य– भारतीय अर्थव्यवस्था बैंकिंग क्षेत्र की रीढ हैं, किसी भी देश का आर्थिक विकास वहां की बैंकिंग प्राणली पर निर्भर करता हैं। बैंक एक ऐसी संस्था है जो ग्राहकों से जमा निवेश एवं ऋण प्रदान करने का कार्य करती हैं, इस शोध पत्र के माध्यम से बैंक ऑफ बड़ौदा एवं आई.सी.आई.सी.आई. बैंक की संपत्ति की गुणवत्ता को विभिन्न अनुपातों के माध्यम मापने प्रयास किया जा रहा हैं, जिसमें बैंको की शुद्ध अग्रिम, शुद्ध ए.पी.ए., कुल परिसंपत्तियों का अध्ययन किया जाएगा। अतः इस शोध पत्र के अध्ययन हेतु यह उपयुक्त शीर्षक हैं।

शोध साहित्य का पूर्वावलोकन

आशीष गुप्ता (शोध पत्र 2015 अक्टूबर) वित्त भारत, वॉल्यूम 16, नंबर 1, पेज न.147–152, सार्वजनिक और निजी क्षेत्र के बैंकों के तुलनात्मक अध्ययन– इनके द्वारा शोध पत्र में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों का वित्तीय प्रदर्शन और निजी क्षेत्र के बैंक का विश्लेषण किया गया हैं। शोध पत्र का लक्ष्य भारतीय अर्थव्यवस्था के वित्तीय प्रदर्शन की जॉच तथा तुलनात्मक अध्ययन करना हैं। शोध अध्ययन में उन तीन तीन सार्वजनिक क्षेत्र एंव निजी क्षेत्र के बैंकों का चयन किया गया हैं। पंजाब नेशनल बैंक व बैंक ऑफ बड़ौंदा तथा निजी क्षेत्र के बैंक (आई.सी. आई.सी.आई.बैंक, एच.डी.एफ.सी.बैंक एक्सिस बैंक) से प्राप्त आकड़ो का विशलेषण प्रबधंकीय तथा वित्तीय विश्लेषण तथा सांख्यिकी तकनीकी सह संबंध विश्लेषण द्वारा किया गया हैं।

डॉ.एम. कविता (शोध पत्र 1 जनवरी 2012) वॉल्यूम 2 पेज नं. 255–269 आई एस एस एन 22315780) ने भारत में चयनित सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों का वित्तीय प्रदर्शन उन्होने अपने शोध पत्र में कहा हैं, कि बैंक हर देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। परिसंचालन में धन की आपूर्ति के एक बड़े हिस्से पर उनका नियंत्रण होता है। बैंक एक वित्तीय मध्यस्थ है,जो उधार गतिविधियों में जमा करने वाले चेनलों को स्वीकार करता हैं। बैंक वित्तीय प्रणाली में एक सक्रिय खिलाड़ी हैं। इस अध्ययन में बैंको की वित्तीय प्रदर्शन लाभप्रदता के मामले में बैंक की उपलब्धियाँ को सदंर्भित करता हैं।

अमित कुमार सिंह (शोध पत्र मई 2015) वाल्यूम 5 ISSN-2250-3153 जर्नल पेज नं. 1 से 11 तक भारत में निजी बैंक की लाभप्रदता स्थिति का विश्लेषण) – इस शोध अध्ययन में चयनित निजी क्षेत्र के बैंक एक्सिस बैंक, आई.सी.आई.सी.आई. बैंक करूर वैश्य बैंक (के.वी.बी.) जैसे बैंकों की लाभप्रदता स्थिति का विश्लेषण किया गया हैं। इसके साथ ही इन बैंकों की शुद्ध लाभ मार्जिन, दीघकालिक निधि पर वापसी ,शुद्ध मूल्य पर वापसी और परिसम्पतियों पर रिर्टन तथा समायोजित नकदी मार्जिन इत्यादि निकाले गये अनुपातो का विश्लेषण किया गया हैं।

शोध विषय के अध्ययन के उद्देश्य

- बैंक ऑफ बड़ौदा की गैर निष्पादित संपत्तियों (NPA) के प्रभाव का अध्ययन करना।
- आई.सी.आई.सी.आई.बैंक की गैर निष्पादित संपत्तियों (NPA) के प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध विषय अध्ययन की परिकल्पनाऐं

बैंक ऑफ बड़ौदा और आई.सी.आई.सी.आई.बैंक की संपत्ति की गुणवत्ता क्षमता में कोइ सार्थक अंतर नहीं है।

शोध विषय के अध्ययन की संरचना

शोध संरचना किसी भी शोध कार्य का आईना होती है जो कि शोध कार्य की कार्यविधि को दर्शाता है इसके अंतर्गत यह वर्णन दिया जाता है कि शोध कार्य को किस प्रकार आगे बढ़ाया जाएगा। इस शोध संरचना में समंको एवं साहित्य का होना अनिवार्य है इस शोध कार्य हेतु हमने द्वितीय समूह का समंको का उपयोग किया है वार्षिक प्रतिवेदन बजट एवं समंक का प्रयोग किया गया है इस शोध विषय के अध्ययन में लिए गए उद्देश्यों का विस्तार पूर्वक के माध्यम से विश्लेषण किया गया है इसी प्रकार इस शोध विषय के अध्ययन में ली गई परिकल्पनाओं का भी परीक्षण सहसंबंध के माध्यम से स्टूडेंट टी टेस्ट के द्वारा किया गया है।शोध विषय के अध्ययन में संपत्ति की गुणवत्ता को ज्ञात करने के लिए C A M E L MODEL का उपयोग किया हैं।

शोध विषय के अध्ययन की सीमाएं

शोध अध्ययन की सीमाएं इस प्रकार हैं:

- प्राप्य समंको एवं साहित्य का अभाव है इस शोध अध्ययन की सीमांत अवधि 2017–18 से 2021–22 तक हैं।
- इस अध्ययन में द्वितीय समंको का उपयोग किया गया है इनकी विश्वसनीयता अंकेक्षण पर निर्भर करती है। इस शोध विषय के अध्ययन में केवल दो बैंकों को लिया गया हैं।
- समंको का समूहीकरण, वर्गीकरण, अध्ययन की आवश्यकताअनुसार किया गया हैं।

आंकड़ों का विश्लेषणात्मक अध्ययन और व्याख्या

तालिका –1

परिसंपत्ति गुणवत्ता अनुपात										
क्रमांक	**बैंक**	**अनुपात**	**वर्ष**					**कुल**	**औसत**	**रैंक**
1	बैंक ऑफ बड़ौंदा	शुद्ध अग्रिम का शुद्ध ए. पी.ए. अनुपात	5.49	3.33	3.13	3.09	1.72	16.76	3.35	2
		कुल सम्पत्ति का कुल निवेश अनुपात	0.23	0.23	0.24	0.23	0.25	1.18	0.24	1
		कुल परिसंपत्ति का शुद्ध एन.पी.ए. अनुपात	3.26	1.99	1.86	1.89	1.05	10.05	2.01	2
2	आई.सी. आई.सी. आई.बैंक	शुद्ध अग्रिम का शुद्ध ए. पी.ए. अनुपात	5.43	2.29	1.54	1.24	0.81	11.31	2.26	1
		कुल सम्पत्ति का कुल निवेश अनुपात	0.23	0.21	0.23	0.23	0.22	1.12	0.22	2
		कुल परिसंपत्ति का शुद्ध एन.पी.ए. अनुपात	3.16	1.39	0.90	0.74	0.49	6.68	1.34	1

स्त्रोंत– बैंको के वार्षिक प्रतिवेदन वर्ष 2017–18 से वर्ष 2021–22

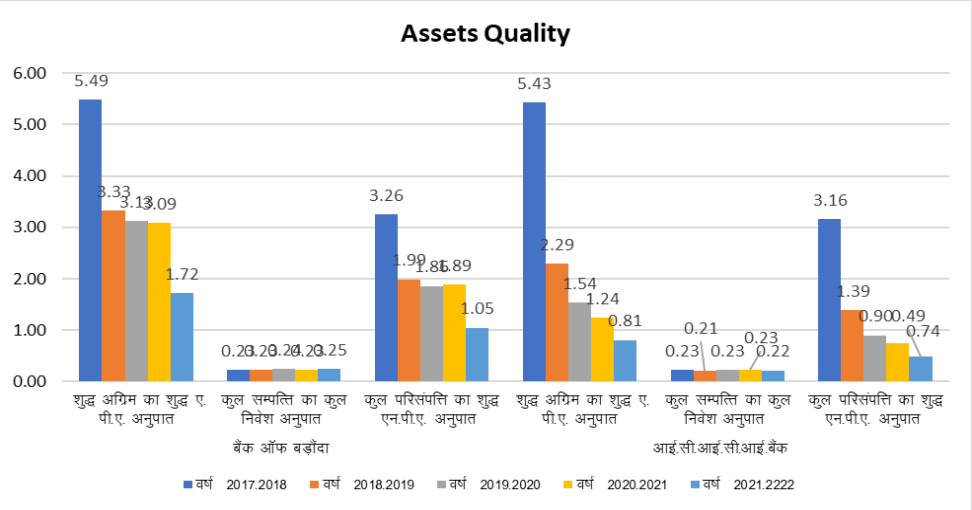

शुद्ध अग्रिम का शुद्ध ए.पी.ए. अनुपात

बैंक ऑफ बड़ौदा का शुद्ध अग्रिम का शुद्ध एन.पी.ए. अनुपात वर्ष 2017–18 मे 5.49 था जो लगातार घटकर वर्ष 2021–22 मे 1.72 हो गया वहीं औसत अनुपात 3.35 हैं। आई.सी.आई.सी.आई. बैंक का अनुपात वर्ष 2017–18 मे 5.43 था जो घटकर वर्ष 2021–22 में 0.81 हो गया और औसत अनुपात 2.26 रहा जो बैंक ऑफ बड़ौंदा की तुलना में अच्छा हैं। यह संपत्ति की गुणवत्ता का सबसे मानक उपाय हैं। इस अनुपात में, शुद्ध एन.पी.ए. को निवल अग्रिम के प्रतिशत के रूप में मापा जाता है। शुद्ध एनपीए की गणना सकल एनपीए से गैर निष्पादित आस्तियों और सस्पेंस खाते में ब्याज पर प्रावधानों को घटाकर अर्थात शुद्ध एन.पी.ए. से की जाती है। इसका कम अनुपात बेहतर हैं। इसे निकालने के लिए निम्न सूत्र का उपयोग किया जाता हैं। Net NPA /Net Advance

कुल सम्पत्ति का कुल निवेश अनुपात

बैंक ऑफ बड़ौदा और आई.सी.आई.सी.आई. बैंक का कुल संपत्ति का कुल निवेश अनुपात वर्ष 2017–18 दोनों बैंक का 0.23 हैं जो समान था वहीं वर्ष 2021– 22 मे बैंक ऑफ बड़ौदा एवं आई.सी.आई.सी.आई. का क्रमशः 0.25 एवं 0.22 था जिसमें कोई ज्यादा अंतर नहीं है। यह अनुपात निवेश में सम्पत्ति की सीमा को दर्शाता है। अनुपात को निवेश में कुल संपत्ति के प्रतिशत को मापने के लिए एक उपकरण के रूप में उपयोग किया जाता है। अनुपात की गणना कुल निवेश को बैंक की कुल संपत्ति से विभाजित करके की जाती है। एक उच्च अनुपात इंगित करता है कि संभावित एन.पी.ए. के खिलाफ सुरक्षा के लिए बैंक ने पारंपरिक रूप से अच्छा निवेश रखा है। हालांकि, इससे इसकी लाभप्रदता पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता हैं। जबकि कम अनुपात यह दर्शाता है कि बैंक अपनी मुख्य गतिविधियों, यानी अग्रिमों पर अधिक ध्यान केंद्रित कर रहा हैं। इसे निकालने के लिए निम्न सूत्र का उपयोग किया जाता हैं। Total Investment /Total Assets

कुल संपत्ति का शुद्ध एन.पी.ए. अनुपात

बैंक ऑफ बड़ौदा एवं आई.सी.आई.सी.आई. बैंक का कुल संपत्ति का शुद्ध एन.पी.ए. अनुपात वर्ष 2017–18 मे क्रमशः 3.26 एवं 3.16 था जो घटकर वर्ष 2021–22 मे क्रमशः 1.05 और 0. 49 हो गया जो बैंक ऑफ बड़ौदा की तुलना में आईसीआईसीआई बैंक के लिए अच्छा है। कुल संपत्ति के लिए शुद्ध एन.पी.ए. अनुपात क्रेडिट जोखिम का आकलन करने और एक हद तक कर्ज की वसूली में बैंक की दक्षता को इंगित करता है। कुल एन.पी.ए. को कुल संपत्ति से विभाजित करके यह अनुपात निकाला जाता है। कम अनुपात अग्रिमों की बेहतर गुणवत्ता (परिसंपत्तियों का बेहतर उपयोग) और बैंक के प्रदर्शन को दर्शाता है। इसे निकालने के लिए निम्न सूत्र का उपयोग किया जाता हैं।

परिकल्पनाओं का परीक्षण

तालिका 2

सहसबंध एवं टी. विश्लेषण				
अनुपात	**सहसबंध**	**ज का गणना मूल्य**	**ज का सारणी मान**	
शुद्ध अग्रिम का शुद्ध ए.पी.ए. अनुपात	r = 0.95	t = 5.26	2.306	t>t0.5
कुल सम्पत्ति का कुल निवेश अनुपात	r = 0.00017	t = 0.00034	2.306	T<t0.5
कुल संपत्ति का शुद्ध एन.पी.ए. अनुपात	r = 0.94	t = 5.14	2.306	t>t0.5

शोध विषय के अध्ययन में ली गई शून्य परिकल्पनाओं का परिक्षण इस प्रकार हैं –

H_{o1}: बैंक ऑफ बड़ौदा और आई.सी.आई.सी.आई. बैंक की संपत्ति की गुणवत्ता क्षमता में कोइ सार्थक अंतर नहीं है।

शोध विषय के अध्ययन में ली गई परिकल्पना है सार्थक हैं क्योंकि शुद्ध अग्रिम का शुद्ध ए.पी.ए. अनुपात एवं कुल संपत्ति का शुद्ध एन.पी.ए. अनुपात में गणना की गई वैल्यू सारणी वैल्यू से अधिक हैं, इसीलिए ली गई शून्य परिकल्पना स्वीकार नहीं है, क्योंकी गैर निष्पादन संपत्तियों का बैंक पर सार्थक प्रभाव पड़ रहा है जबकि कुल सम्पत्ति का कुल निवेश अनुपात में गणना की गई टी वैल्यू सारणी वैल्यू से कम हैं, इसीलिए ली गई शून्य परिकल्पना स्वीकार है, क्योंकि कुल सम्पत्ति पर कुल निवेश पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ रहा है, अर्थात दोनों बैंको में कुल सम्पत्ति पर कुल निवेश में कोइ सार्थक अंतर नहीं हैं। निष्कर्षतः हम कह सकते हे कि दोनों बैंको में परिसंपत्ति गुणवत्ता में सार्थक अंतर है,, अर्थात शोध अवधि के दौरान चयनित बैंकों की संपत्ति की गुणवत्ता अलग हैं।

निष्कर्ष

कुल परिसंपत्ति का शुद्ध एन.पी.ए. अनुपात दर्शाता है कि बैंक की जो आय कमाने वाली संपत्तियां हैं उनसे आय का अर्जन नहीं हो रहा हैं, या फिर आय का अर्जन कम हो रहा हैं, इसका मुख्य कारण बैंक के वह क्रेडिट डिफाल्टर हैं जो बैंक की लाभप्रदता और संपत्ति के शुद्ध मूल्य को कम करते हैं। तालिका से पता चलता है की चयनित बैंकों का कुल परिसंपत्तियों का शुद्ध एन.पी.ए. अनुपात सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक ऑफ बड़ौदा की तुलना में निजी क्षेत्र के आई.सी.आई.सी.आई. बैंक कम है। अगर दोनों का पिछले 5 वर्षो का औसत अनुपात देखा जाए तो बैंक ऑफ बड़ौदा का 3.35 एवं आई.सी.आई.सी.आई बैंक 2.26 प्रतिशत रहा पता निष्कर्ष के तौर पर कहा जा सकता है कि कुल परिसंपत्तियों का शुद्ध एन.पी.ए. अनुपात बैंक ऑफ बड़ौदा की तुलना में आई.सी. आई.सी.आई बैंक का बेहतर है यह अनुपात बैंक द्वारा दिए गए उधार को वसूलने की दक्षता को दर्शाता है, जिसमें आई.सी.आई.सी.आई बैंक बैंक ऑफ बड़ौदा की तुलना में ज्यादा दक्ष हैं। बेंको की संपत्ति की गुणवत्ता को मापने हेतु शोधार्थी द्वारा तीन अनुपातों का उपयोग किया गया जिसमे शुद्ध अग्रिम का शुद्ध एनपीए अनुपात, कुल संपत्ति का कुल निवेश अनुपात, कुल परिसंपत्ति का शुद्ध एन.पी.ए. अनुपात शामिल है। तीनों अनुपातों में बैंक ऑफ बड़ौदा की तुलना में आई.सी.आई.सी.आई. बैंक श्रेष्ठ हैं।

सुझाव

- सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक ऑफ बड़ौदा का एन.पी.ए.निजी क्षेत्र की आई.सी.आई.सी.आई. बैंक की तुलना में अधिक है, जो एक बड़ी समस्या है इस हेतु बैंक ऑफ बड़ौदा को उचित कठोर तरीको से ऋण वसूली एवं ऋण वितरण तंत्र को मजबूत करना चाहिए।
- बैंकों में एन.पी.ए. की राशि वसूल करने के लिए तर्कसंगत वसूली प्रणाली जैसे समझोता निपटान, वसूली शिविर इत्यादि माध्यम से समय–समय पर ऋण वसूली करनी चाहिए जिससे बैंकों पर एनपीए का भार कम सके।

- ऋण वितरण एवं ऋण वसूली से संबंधित कर्मचारियों के लिए समय–समय पर प्रशिक्षण आवश्यक होना चाहिए जिससे ऋण वसूली एवं वितरण का कार्य बेहतर हो सके।
- किसी बैंक की सफलता के लिए यह आवश्यक है कि वह अपनी आस्तियों (Assets) से अधिकतम् लाभ प्राप्त करे। लेकिन अधिकतम् लाभ के उद्देश्य के साथ–साथ बैंक को अपनी आस्तियों (Assets) की सुरक्षा का भी ध्यान रखना होगा। अतः बैंक को ऐसी विनियोग नीति (Investment Policy) बनानी चाहिए जो एक ओर उसे अधिकतम् लाभ तथा दूसरी ओर जमाकर्ताओं को अधिकतम् सुरक्षा प्रदान करे।
- दोनों बैंकों को चाहिए की के सदैव पर्याप्त मात्रा में रोकड़ रहे अथवा विनियोग ऐसी प्रतिभूतियों में किया जाये जिसे आसानी से तुरन्त रोकड़ में परिवर्तित किया जा सके ताकि जमाकर्ताओं की रोकड़ की माँग की पूर्ति हो सके।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Madhvi, and Srivastava, A.(2017). Prediction of Bank Failure Using Financial Ratios. International Journal of Economic Research, 14(16) III, 421-430, ISSN 0972- 9380
2. Madhvi, and Srivastava, A. (2016). A Comparative Study on Dominance and Performance of Banks in India Using Camel Method. SDIMT- Management Review, 3 (1), PP 70-75, ISSN 2320-5814.
3. Arora S, Kaur S. (2006) Financial Performance of Indian Banking Sector in Post-Reform Era. The Indian Journal of Commerce. 59(1): PP 96-105
4. Bodla BS, Verma R. (2006) Evaluating Performance of Banks through CAMEL Model: A Case Study of SBI and ICICI. The ICFAI Journal of Bank Management. 5(3): PP 49-63
5. Dharmalingam S, Kannan KV. (2011) Customer Perception on Service Quality of New Private Sector Banks in Tamilnadu - an Empirical Study. Journal on Banking Financial Services and Insurance Research (JBFSIR). PP 1(5)
6. Bodla BS, Verma R. (2006) Evaluating Performance of Banks through CAMEL Model: A Case Study of SBI and ICICI. The ICFAI Journal of Bank Management. 5(3): PP 49-63
7. www.icicibank.com
8. www.bankofbaroda.in
9. www.moneycontrol.com
10. Bank of Baroda and ICICI Bank Annual Report 2017 to 2022

❖◆❖